This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **12625**

Unique Paper Code : **2055002002**

Name of the Paper : हिंदी गद्य : उद्भव और विकास **'ख'**

Name of the Course : **B.A. Prog. Hindi GE**

Semester : **III**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×8=24

(क) बुधगुप्त ने चंपा के पैर पकड़ लिए। उच्छ्वसित शब्दों में वह कहने लगा—"चंपा, हम लोग जन्मभूमि-भारतवर्ष से कितनी दूर इन निरीह प्राणियों में इंद्र और शची के समान पूजित हैं। पर न जाने कौन अभिशाप हम लोगों को अभी तक अलग किए है। स्मरण होता है वह दार्शनिकों का देश! वह महिमा की प्रतिमा। मुझे वह स्मृति नित्य आकर्षित करती है; परंतु मैं क्यों नहीं जाता ? जानती हो, इतना महत्त्व प्राप्त करने पर भी मैं कंगाल हूँ। मेरा पत्थर-सा हृदय एक दिन सहसा तुम्हारे स्पर्श से चन्द्रकांतमणि की तरह द्रवित हुआ। "चंपा! मैं ईश्वर को नहीं मानता, मैं पाप को नहीं मानता, मैं दया को नहीं समझ सकता, मैं उस लोक में विश्वास नहीं करता। पर मुझे अपने हृदय के एक दुर्बल अंश पर श्रद्धा हो चली है। तुम न जाने कैसे एक बहकी हुई तारिका के समान मेरे शून्य में उदित हो गई हो। आलोक की एक कोमल रेखा इस निविड़तम में मुस्कुराने लगी। पशु-बल और धन के उपासक के मन में किसी शांत और एकांत कामना की हँसी खिलखिलाने लगी; पर मैं न हँस सका!"

P.T.O.

अथवा

कमरे में हँसी की फुहार एक कोने से दूसरे कोने तक फैल गयी। लतिका के कमरे में आने से अनुशासन की जो घुटन घिर आयी थी, वह अचानक बह गयी। करीमुद्दीन होस्टल का जोकर था; उसके आलस और काम में टालमटोल करने की किस्से-कहानियाँ होस्टल की लड़कियों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली जाती थीं। लतिका को हठात् कुछ स्मरण हो आया। अँधेरे में लैम्प घुमाते हुए उसने चारों ओर निगाहें दौड़ायीं। कमरे में चारों ओर घेरा डालकर वे बैठी थीं—पास-पास, एक-दूसरे के समीप, एक-दूसरे से सटकर। सबके चेहरे परिचित थे किंतु लैम्प के पीले मद्धिम प्रकाश में जैसे कुछ बदल गया था, जैसे वह उन्हें पहली बार देख रही थीं।

(ख) जुबान सब इंद्रियों में इतनी प्रबल है कि यह जाइका लेने के समय सिवाय रस के जो इसका प्रधान विषय है, शब्द स्पर्श रूप गंध सवों को अपने साथ समेटती है। भोजन के समय जरा भी दुर्गंधि हो या खाना जिसे हम खा रहे हैं, गंघाता हो, कभी न खाया जायेगा। खाने की कौन कहे मिचलाई आने लगेगी, जो पेट में है वह भी बाहर निकल पड़ेगा। उनकी तो बात ही निराली है जिन्हें दुगीच ही सुगंधि हैं। हमारे साहबान अंग्रेजों के साथ और सुथरे दस्तरखान पर चमाचम रकाबियों में जब तक महीनों की सड़ी मांस या मछली और पनीर न रखी हो तब तक लज्जत और जाइका नहीं जिसकी झझक पाय दूर ही से नांक सड़ती है। जितनी ही जियादह झझका हो उतना ही जियादह जायका! किन्तु सफाई को इतना अधिक अधिकार दिया गया है कि होटलिये हिंदुस्तानी भाई भी उसी सफाई पर मोहित हो साहबों की जूठी रकाबियों पर मक्खी-सा जा टूटते हैं।

अथवा

सत्वगुण के समुद्र में जिनका अन्तःकरण निमग्न हो गया वे ही रहात्मा, साधु और वीर हैं। वे लोग अपने क्षुद्र जीवन को परित्याग कर ऐसा ईश्वरीय जीवन पाते हैं कि उनके लिये संसार के सब अगम्य मार्ग साफ हो जाते हैं। आकाश उनके ऊपर बादलों के छाते लगाता है। प्रकृति

उनके मनोहर माथे पर राजतिलक लगाती है। हमारे असली और सच्चे राजा ये ही साधु पुरुष हैं। हीरे और लाल से जड़े हुए, सोने और चाँदी से जर्क-बर्क सिंहासन पर बैठने वाले दुनिया के राजाओं को तो, जो गरीब किसानों की कमाई हुई दौलत पर पिंडोपजीवी होते हैं, लोगों ने अपनी मूर्खता से वीर बना रखा है। ये जरी मखमल और जेवरों से लदे हुए माँस के पुतले तो हरदम काँपते रहते हैं। इन्द्र के समान ऐश्वर्यवान् होने पर भी दुनिया के ये छोटे 'जार्ज' बड़े कायर होते हैं। क्यों न हों, इनकी हुकूमत लोगों के दिलों पर नहीं होती। दुनिया के राजाओं के बल की दौड़ लोगों के शरीर तक है। हाँ जब कभी किसी अकबर का राज लोगों के दिलों पर होता है। तब इन कायरों की बस्ती में मानो एक सच्चा वीर पैदा होता है।

(ग) तो तुम देश के महत्व को नहीं समझीं। तुम्हारे पिता, तुम्हारे दादा और तुम्हारी न जाने कितनी पीढ़ियों ने इस भूमि की रक्षा में अपना रक्त सींचा है, बहन। कितनी बहनों नें अपने भाइयों को रणभूमि में विसर्जित किया है, कितनी सुंदरियों ने यौवन के प्रभातकाल में पतियों को स्वर्ग का मार्ग दिखाया है। यह एक विजया या एक श्रीपाल का प्रश्न नहीं है—यह देश का प्रश्न है।

अथवा

जीवन में मैंने जितने विचित्र व्यक्ति और जैसे रहस्यमय इतिवृत्त देखे सुने हैं, उनके सामने कल्पना के सभी निर्माण फीके पड़ सकते हैं; पर गुंगिया मेरे हृदय में जो करुण विस्मय जगा सकी थी, वह फिर नहीं जागा। मेरा पत्र-लेखन-क्रम टूटा नहीं। तब मैं अपने विनोद के लिए दूसरों की जीवन-कथा लिखती थी और अब दूसरों के सुख-दुःख पढ़ती हूँ, गुगिया-जैसे व्यक्तित्व को खोजने के लिए पर संसार में अज्ञान की जितनी आवृत्तियाँ होती हैं उतनी ज्ञान की नहीं, इसी से जीवन रहस्य की झलक देने वाले क्षणों का प्रत्यावर्तन भी सहज नहीं।

2. कहानी के विकास का सामान्य परिचय दीजिए। 15

अथवा

'निबंध' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

3. कहानी तत्वों के आधार पर 'आकाशदीप' कहानी की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

'परिंदे' कहानी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

4. 'जबान' निबंध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

'सच्ची वीरता' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए।

5. 'मालवप्रेम' एक ऐतिहासिक एकांकी नाटक है, समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

गुंगिया की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 6

(क) संस्मरण का स्वरूप

(ख) एकांकी की विशेषताएँ।

SRI AUROBINDO COLLEGE
तमसो मा ज्योतिर्गमय
UNIVERSITY OF DELHI